Dr. Dhananjay Kumar Singh

Assistant Professor

S. R. A. P college

उतरवैदिक काल में राजनीतिक स्थिति

- उतरवैदिक कालिन राजनीतिक स्थिति के बारे में मुख्य स्त्रोत तीन वेद + ब्राह्मण + आरण्यक + उपनिषद मुख्य रूप से उपलब्ध हैं।

- ऋग्वैदिक काल से उतरवैदिक काल में आए मुख्य परिवर्तन का अध्ययन किया जाना है

(i) विशेषता : उतरवैदिक काल में वैदिक संस्कृति का विस्तार कहाँ-कहाँ।

— ऋग्वैदिक काल में जहाँ वैदिक संस्कृति का विस्तार पंजाब (पाकिस्तानी + भारतीय क्षेत्र) कश्मीर + राजस्थान + दिल्ली (हरियाणा तक ही था, वही उतरवैदिक काल में वैदिक संस्कृति का फैलाव विस्तार, पंजाब, कश्मीर राजस्थान हरियाणा, दिल्ली + UP + उतरी बिहार तक हो गया।

— ऋग्वेद में केवल तीन पर्वतो का उल्लेख था - हिमवंत, मुजवंत, सिलवंत, उतरवैदिक कालिन साहित्य में देखते है कि इन पर्वतो के अलावे ~~त्रिकुद~~ त्रिककुद, क्रौञ्च, मैनाक पर्वत का

उल्लेख है ये पर्वत पूरब की ओर हैं। इसका मतलब है आर्यों की जानकारी भौगोलिक रूप से पूरब की ओर बढ़ रही हैं

- कौषीतकी उपनिषद में दक्षिणाद्य पर्वत का उल्लेख है इतिहासकारों ने इसका संबंध विंध्य पर्वत से स्थापित किया है जो अभी पूर्वी म०प्र के सीमा की ओर है इसका अर्थ है कि आर्य की जानकारी पूरब ~~की~~ और ~~अ~~ दक्षिण की ओर बढ़ रही है।

- ऋग्वेद में यमुना और गंगा नदी का मामूली उल्लेख हुआ है। यमुना का तीन बार और गंगा का 2 बार लेकिन उत्तरवैदिक काल में आर्य की नजर में इन दो नदियों का खास महत्व है। आर्य यमुना गंगा के सम्पूर्ण बहाव क्षेत्र से परिचित हैं यानि आर्यों की जानकारी पूरब दिशा मे बढ़ रही है।

- ऋग्वेद में बिहार के किसी नदी का जिक्र नहीं मिलता लेकिन उत्तरवैदिक साहित्य शतपथ ब्राह्मण में बिहार की एक नदी का उल्लेख हुआ है और यह नदी है

- सदानीरा (गंडक) नदी, साथ ही-साथ बिहार के दो क्षेत्र (अंग (पूर्वी बिहार, मगध (मध्य बिहार का उल्लेख मिलता है इसका मतलब है कि आर्य उत्तरवैदिक कालिन बिहार को जान गए हैं।

- ऋग्वेद में बंगाल के किसी क्षेत्र का जिक्र नही मिलता लेकिन शतपथ ब्राह्मण में बंगाल के दो क्षेत्र (पुंड - उत्तरी बंगाल, बंग (मध्य बंगाल की चर्चा है आर्य तटीय बंगाल को छोड़कर सम्पूर्ण बंगाल से परिचीत हैं।

- ऋग्वेद में मध्य प्रदेश के किसी नदी का उल्लेख नही मिलता लेकिन उत्तरवैदिक साहित तैत्तरीय तैत्तरीय संहिता में रेवोत्तरा नदी क उल्लेख है जिसका समीकरण वर्तमान में नर्म नदी से स्थापित किया जाता है।

- आर्य मध्य प्रदेश को नही जानते इसके कुछ क्षेत्रों से परिचीत है लेकिन अभी इस नहीं हैं। इसका मतलब है कि आर्यिकरण की दिशा पुरब की ओर हो रही हैं तभी शतप ब्राह्मण में माधव विदेह की कथा में यह बताया

कुरु और पांचाल जनपद इस दौर मे सबसे शक्तिशाली है इसे वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि आर्य संस्कृति के धुरी उत्तम संस्कृत भाषा के वक्ता के रूप में भी जाना जाता है।

- उत्तरवैदिक काल में शासनिक प्रणाली में काफी परिवर्तन देखने को मिलता है—

उत्तरवैदिक साहित्य ऐतरेय ब्राह्मण में शासनिक प्रणाली की काफी विस्तार से जानकारी मिलती है इस दौर में अलग-अलग दिशाओं में अलग-अलग शासन प्रणालियां प्रचलित थी।

उत्तर
(वैराज्य शासन प्रणाली (इसके प्रधान को विराट कहते थे

पूरब - साम्राज्य शासन प्रणाली (इसके प्रधान को सम्राट कहते।

(राज्य शासनप्रणाली)

पश्चिम (स्वाराज्य शासन प्रणाली (स्वराट

दक्षिण (भोज्य शासन प्रणाली (इसके प्रधान को भोज कहते)

स्वाराज्य प्रणाली के प्रधान को = स्वराट

राज्य शासन प्रणाली = राजा
इसके प्रधान को